The Knowledge Spectrum: An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3107-3557 (Online)

40

साहित्य, समाज, शिक्षा और संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में भारतीय ज्ञान-परंपरा और मूल्य

Dr. Mamta Sharma
Principal
Vivekanand College of Arts Ahmedabad, Gujarat

सारांश :

भारतीय संस्कृति का मूल आधार ही भारतीय ज्ञान परम्परा है। भारतीय ज्ञान परम्परा भारतवर्ष में प्राचीन काल से चली आ रही शिक्षा प्रणाली है। इसके अंतर्गत वेद, वेदांग, उपनिषद, श्रुति, स्मृति से लेकर विभिन्न प्रकार के दर्शनशास्त्र, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, शिक्षाशास्त्र, नाट्यशास्त्र, प्रबन्धन एवं विज्ञान विद्याशाखा इत्यादि के अथाह ज्ञान भण्डार हैं। भारतीय ज्ञान परम्परा के अंतर्गत शिक्षा को विद्या, ज्ञान, दर्शन, प्रबोध, प्रज्ञा, वागीशा एवं भारती इत्यादि शब्दों से परिभाषित किया गया है। भारतीय ज्ञान परम्परा में मूल्य-आधारित शिक्षा- नैतिक और सामाजिक चेतना से व्यक्तियों के पूर्ण निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही है। भारत में शिक्षा की अवधारणा ज्ञान प्राप्त करने से आगे निकल कर सत्य, अहिंसा, धर्म और निःस्वार्थ सेवा को बढ़ावा देने पर केंद्रित रहा है, जो देश के आध्यात्मिक और सामाजिक ताने-बाने का अभिन्न अंग हैं। गुरुकुल मॉडल, ने उपनिषदों और गीता में वर्णित जीवन मूल्यों को व्यापक दृष्टिकोण के साथ संरेखित करते हुए, आंतरिक ज्ञान, चरित्र और समाज के प्रति जिम्मेदारी विकसित करने के साधन के रूप में सीखने पर जोर दिया। मूल्य-आधारित शिक्षा, सदियों पुरानी शिक्षा को एकीकृत करके, न केवल शैक्षणिक विकास को बढ़ावा देती है, बल्कि ऐसे व्यक्तियों के निर्माण को भी बढ़ावा देती है जो विविधता का सम्मान करते हैं, न्याय को बनाए रखते हैं और समाज में सकारात्मक योगदान देते हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा की यह धरोहर आज भी शिक्षा के क्षेत्र में प्रेरणा का स्रोत बनी हुई है और यह एक समृद्ध, समग्र एवं संतुलित समाज की नींव रखने में अहम भूमिका निभाती है।- स्वामी विवेकानंद कहते है - " हम ऐसी शिक्षा चाहते हैं जिससे चरित्र का निर्माण हो, मन की शक्ति बन बुद्धि का विस्तार हो और जिससे व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा हो सके।" भारतीय साहित्य (वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, गीता) केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि ज्ञान, दर्शन, विज्ञान (गणित, खगोल, चिकित्सा) और सामाजिक मूल्यों का भंडार है। तुलसीदास के रामचरितमानस जैसे ग्रंथ समाज में धर्म, न्याय और प्रजा-हितैषी शासन के आदर्शों को स्थापित करते हैं। साहित्य तत्कालीन समाज की समस्याओं (दरिद्रता, विषमता) का यथार्थवादी चित्रण कर सुधार के लिए प्रेरित करता है। भारतीय परंपरा छात्रों को ऐसे चिंतनशील प्रथाओं (अभ्यासों) में संलग्न होने के लिए प्रोत्साहित करती है जो व्यक्तिगत विकास को सामाजिक भलाई के साथ जोड़ते हैं। ऐसे में जब भारत अपनी वैश्विक उपस्थिति पर जोर दे रहा है, मूल्य-आधारित शिक्षा को फिर से जोर दे कर भावी नेतृत्व का निर्माण हो सकेगा, जो भारतीय ज्ञान परंपरा और समकालीन जरूरतों में अंतरसंबंध कर एक संतुलित और टिकाऊ वैश्विक समाज का निर्माण करेगा।

मुख्य शब्द : भारतीय ज्ञान परंपरा, भारतवर्ष, प्रबन्धन, दर्शन, प्रबोध, प्रज्ञा, वागीशा, गुरुकुल, गणित, खगोल, चिकित्सा, पांडुलिपियों, राष्ट्रीय, सांस्कृतिक मूल्य

प्रस्तावना :

भारतीय संस्कृति का मूल आधार ही भारतीय ज्ञान परम्परा है। भारतीय ज्ञान परम्परा भारतवर्ष में प्राचीन काल से चली आ रही शिक्षा प्रणाली है। इसके अंतर्गत वेद, वेदांग, उपनिषद, श्रुति, स्मृति से लेकर विभिन्न प्रकार के

दर्शनशास्त्र, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, शिक्षाशास्त्र, नाट्यशास्त्र, प्रबन्धन एवं विज्ञान विद्याशाखा इत्यादि के अथाह ज्ञान भण्डार हैं। भारतीय ज्ञान परम्परा के अंतर्गत शिक्षा को विद्या, ज्ञान, दर्शन, प्रबोध, प्रज्ञा, वागीशा एवं भारती इत्यादि शब्दों से परिभाषित किया गया है। भारतीय ज्ञान प्रणाली के स्वर्णिम इतिहास का अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि प्राचीन समय में इस परम्परा का अभीष्ट उद्देश्य ज्ञान की प्राप्ति करते हुए विद्यार्थी के व्यक्तिव का सर्वांगीण विकास करना तथा उसे समाजोपयोगी एवं मोक्षगामी बनाना था। भारतीय ज्ञान परम्परा प्रज्ञा का प्रतीक है जिसमें ज्ञान एवं विज्ञान, लौकिक एवं पर-लौकिक, कर्म एवं धर्म तथा भोग व त्याग का अद्भुत समन्वय रहा है। इस प्रकार प्राचीन समय से ही शिक्षा के प्रति भारतीय ज्ञान परम्परा का दृष्टिकोण अत्यन्त व्यापक एवं सूक्ष्म रहा है।

भारतीय ज्ञान परम्परा में मूल्य-आधारित शिक्षा- नैतिक और सामाजिक चेतना से व्यक्तियों के पूर्ण निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही है। भारत में शिक्षा की अवधारणा ज्ञान प्राप्त करने से आगे निकल कर सत्य, अहिंसा, धर्म और निःस्वार्थ सेवा को बढ़ावा देने पर केंद्रित रहा है, जो देश के आध्यात्मिक और सामाजिक ताने-बाने का अभिन्न अंग हैं। गुरुकुल मॉडल, ने उपनिषदों और गीता में वर्णित जीवन मूल्यों को व्यापक दृष्टिकोण के साथ संरेखित करते हुए, आंतरिक ज्ञान, चरित्र और समाज के प्रति जिम्मेदारी विकसित करने के साधन के रूप में सीखने पर जोर दिया । मूल्य-आधारित शिक्षा, सदियों पुरानी शिक्षा को एकीकृत करके, न केवल शैक्षणिक विकास को बढ़ावा देती है, बल्कि ऐसे व्यक्तियों के निर्माण को भी बढ़ावा देती है जो विविधता का सम्मान करते हैं, न्याय को बनाए रखते हैं और समाज में सकारात्मक योगदान देते हैं । वर्तमान में, यह दृष्टिकोण मानवाधिकार और सामाजिक समानता जैसे मुद्दों की नैतिक समझ को बढ़ावा दे सकता है । भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व में अपनी गहनता, व्यापकता और समग्रता के लिए है । यह परंपरा केवल सूचनाओं के एकत्रीकरण भर नहीं है, बल्कि इसका मनुष्य के व्यक्तित्व का ऐसा विकास करना है, जो उसे जीवन के उच्च्च आदर्शों मूल्यों के साथ जोड़ सके। इस परंपरा में शिक्षा को जीवन का मूल आधार और का परिष्कार माना गया है । भारतीय शिक्षा पद्धति में विद्या का अर्थ केवल क ज्ञान अर्जित करना नहीं, बल्कि सत्य, अहिंसा, धर्म, करुणा, और मानवता शाश्वत मूल्यों को आत्मसात करना है। वेदों, उपनिषदों और गीता जैसे महान ग्रन्थों में शिक्षा का उद्देश्य सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय, के आदर्श को स्थापित बताया गया है । भारतीय चिंतन में शिक्षा को केवल व्यावसायिक दक्षता का म नहीं, बल्कि समाज और प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्वपूर्ण जीवन जीने की कला माना गया है। गुरुकुल परंपरा में शिक्षक और शिष्य का रिश्ता केवल ज्ञान-दाता और ज्ञान-ग्राही का नहीं, बल्कि चरित्र-निर्माण और मूल्य-स्थापन का रहा । आज के बदलते परिदृश्य में, जब नैतिक मूल्यों का हास हो रहा है । प्रदाता आर ज्ञान-ग्राही का नहीं, बल्कि चरित्र-निर्माण और मूल्य-स्थापन का रहा है । आज के बदलते परिदृश्य में, जब नैतिक मूल्यों का हास हो रहा है, भारतीय ज्ञान परंपरा में मूल्य-आधारित शिक्षा की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ जाती है यह शिक्षा न केवल व्यक्तिगत विकास को दिशा देती है, बल्कि समाज में एकता सहिष्णुता और शांति की स्थापना में भी सहायक होती है। मूल्य-आधारित शिक्षा का उद्देश्य केवल भौतिक सफलता अर्जित करना नहीं, बल्कि आंतरिक संतुलन और आत्मबोध के माध्यम से मानवता की सेवा करना है । "ऋग्वेद के समय से लेकर अब तक हमारी प्राचीन शिक्षा प्रणाली विकसित हुई है और व्यक्ति के आंतरिक और बाह्य दोनों पहलुओं का ध्यान रखते हुए उसके समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित किया गया है । इस प्रणाली में जीवन के नैतिक, शारीरिक, आध्यात्मिक और बौद्धिक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया गया है" (१) (NCERT, 2024-25)।

भारतीय ज्ञान परंपरा की यह धरोहर आज भी शिक्षा के क्षेत्र में प्रेरणा का स्रोत बनी हुई है और यह एक समृद्ध, समग्र एवं संतुलित समाज की नींव रखने में अहम भूमिका निभाती है।- स्वामी विवेकानंद कहते है - " हम ऐसी शिक्षा चाहते हैं जिससे चरित्र का निर्माण हो, मन की शक्ति बन बुद्धि का विस्तार हो और जिससे व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा हो सके।"

साहित्य (Literature) के परिप्रेक्ष्य में :

भारतीय साहित्य (वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, गीता) केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि ज्ञान, दर्शन, विज्ञान (गणित, खगोल, चिकित्सा) और सामाजिक मूल्यों का भंडार है। तुलसीदास के रामचरितमानस जैसे ग्रंथ समाज में धर्म, न्याय और प्रजा-हितैषी शासन के आदर्शों को स्थापित करते हैं। साहित्य तत्कालीन समाज की समस्याओं (दरिद्रता, विषमता) का यथार्थवादी चित्रण कर सुधार के लिए प्रेरित करता है। भारतीय ज्ञान परम्परा का हिंदी साहित्य में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान है। यह परम्परा प्राचीन भारतीय संस्कृतियों, दार्शनिक विचारों, धार्मिक ग्रंथों एवं सांस्कृतिक मूल्यों का समाहार है, जिसने हिंदी साहित्य के विकास में गहरा प्रभाव डाला। वेद, उपनिषद, पुराण एवं स्मृति जैसे धार्मिक और दार्शनिक ग्रंथों ने हिंदी साहित्य की विषय-वस्तु एवं भाषा दोनों को प्रभावित किया। अनेक हिंदी रचनाएँ इन ग्रंथों से प्रेरित होकर बनी हैं।" भारतीय ज्ञान परम्परा ने हिंदी साहित्य में नैतिकता, धर्म और अध्यात्म के विषयों को प्रमुखता दी। तुलसीदास, सूरदास, कबीर तथा मीराबाई जैसे कवियों की रचनाओं में ये विचार अलग-अलग रूप में प्रकट होते हैं। संस्कृत एवं प्राकृत भाषाओं से हिन्दी में शब्द भंडार और अलंकारिक शैली विकसित हुई जिसने हिंदी साहित्य की भाषा को समृद्ध किया। भारतीय ज्ञान परम्परा ने साहित्य को सामाजिक नियम-संस्कार, लोक संस्कृति और जीवन दर्शन से जोड़ा। इसने साहित्य को जनजीवन का दर्पण भी बनाया। ये परम्पराएँ साहित्य में शिक्षा, तर्क-विवेक, विज्ञान एवं चिकित्सा ज्ञान के साथ-साथ ज्योतिष और अर्थशास्त्र जैसे विषयों का भी प्रवेश कराती हैं।" (२) साहित्य ने प्राचीन ज्ञान को संरक्षित किया। वेदो की मौखिक परंपरा से लेकर पांडुलिपियो तक, साहित्य ने विकृति से बचाया। उदाहरणस्वरुप, पुराणो ने लोककथाओं के माध्यम से वैज्ञानिक तथ्यो (जैसे खगोल) को प्रसारित किया। जैन साहित्य (उत्तराध्ययन सूत्र) में ध्यान और योग का वर्णन साहित्यिक रुप से किया गया है। साहित्य नैतिक मूल्यों का स्रोत है। रामायण में धर्म और कर्तव्य, जबकि महाभारत में नीति का चित्रण है। भक्ति साहित्य (तुलसी,सूरदास, मीरा) ने आध्यात्मिक ज्ञान को सरल किया, जिससे सामाजिक समावेशिता बढ़ी। इस प्रकार, भारतीय ज्ञान परम्परा साहित्य को एक गहन, विविधतापूर्ण और समृद्ध सांस्कृतिक परिचय देती है, जो साहित्य की भाषा, विषय, शिल्प और भाव-आभास को यथार्थवादी और प्रभावशाली बनाती है।

शिक्षा (Education) के परिप्रेक्ष्य में :

प्राचीन शिक्षा (गुरुकुल) का लक्ष्य केवल किताबी ज्ञान नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण, आत्म-बोध (मुक्ति) और समाज के प्रति जिम्मेदारी सिखाना था। सत्य, अहिंसा, अनुशासन, आत्मनिर्भरता और सभी प्राणियों के प्रति सम्मान जैसे मूल्यों को शिक्षा का केंद्र बनाया गया। नालंदा, तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालयों ने विभिन्न क्षेत्रों (गणित, चिकित्सा, दर्शन) में ज्ञान का प्रसार किया, जिसमें स्त्री-विदुषी (गार्गी, मैत्रेयी) भी शामिल थीं।

समाज (Society) के परिप्रेक्ष्य में :

यह परंपरा संस्कारों के माध्यम से समाज को मजबूत करती है और सांस्कृतिक मूल्यों से जोड़ती है। हमारी भारतीय संस्कृति को विश्व फ़लक पर उत्कृष्ट बनाने के लिए अग्रसर है|

समूह एकता और कल्याण की भावना का विकास :

'वसुधैव कुटुम्बकम्' (विश्व एक परिवार है) और 'आत्मनो मोक्षार्थ जगद्धिताय च' (स्वयं के मोक्ष के लिए और जगत के कल्याण के लिए) जैसे विचार समाज को एकता और सेवाभाव से जोड़ते हैं। यह हमारे समाज की सामाजिक एकता के लिए प्रत्येक व्यक्ति और समाज कल्याण के लिए हमें प्रेरित करती है। भारतीय ज्ञान परंपरा में सामाजिक न्याय और समानता के विचार निहित हैं, जो समाज को सशक्त बनाते हैं।

संस्कृति (Culture) के परिप्रेक्ष्य में :

जीवनशैली :

यह केवल ग्रंथ नहीं, बल्कि जीवन जीने का तरीका है, जो प्रकृति से सामंजस्य, कला, वास्तुकला और स्वास्थ्य (आयुर्वेद) में समाहित है। यह हमारी जीवन शैली है जो मूल्य सम्पन्न है। इसीसे समाज के सामाजिक मूल्यों को प्रदर्शित करती है। यह साहित्य हमारी जीवन शैली का दर्पण है। यह भारतीय संस्कृति की विविधता (कला, भाषा, रीति-रिवाज) को पोषित करती है और राष्ट्रीय पहचान देती है। हमारे सांस्कृतिक मूल्यों की पहचान है।

पुनरुत्थान की आवश्यकता :

भारतीय परंपरा छात्रों को ऐसे चिंतनशील प्रथाओं (अभ्यासों) में संलग्न होने के लिए प्रोत्साहित करती है जो व्यक्तिगत विकास को सामाजिक भलाई के साथ जोड़ते हैं। ऐसे में जब भारत अपनी वैश्विक उपस्थिति पर जोर दे रहा है, मूल्य-आधारित शिक्षा को फिर से जोर दे कर भावी नेतृत्व का निर्माण हो सकेगा, जो भारतीय ज्ञान परंपरा और समकालीन जरूरतों में अंतरसंबंध कर एक संतुलित और टिकाऊ वैश्विक समाज का निर्माण करेगा। आधुनिक युग में, पाश्चात्य प्रभाव के बाद, इस ज्ञान परंपरा को शिक्षा और समाज के माध्यम से पुनर्जीवित करने का प्रयास किया जा रहा है ताकि संतुलित और टिकाऊ भविष्य का निर्माण हो सके।

संदर्भ सूची :

1. राजनीति विज्ञान, स्कूल ऑफ लिबरल आर्टस, आई०एम०एस० यूनिसन यूनिवर्सिटी, देहरादून-248009)
2. https://researchtrendsjournal.com Spiritual Education